एक संक्षिप्त समीक्षात्मक रपट

ग्रीमष्मकालीन शिविर सह कार्यशाला

(17 मई 2012 – 2 जून 2012)

यह ग्रीष्मकालीन शिविर निजामुद्दीन बस्ती के नगर निगम सहशिक्षा प्रतिभा स्कूल में आयोजित किया गया. इसमें आगा खान डेव्हलपमेंट नेटवर्क की समुदाय शिक्षिकाओं ने बच्चों के साथ काम किया. बच्चों के साथ काम करने की योजना पहले ही बना ली गयी थी. जिसमें मोटे तौर पर हर समूह के साथ हर रोज चार काम किये जाने थे – कला, भाषा, गणित और पठन गतिविधियाँ. बच्चों के पांच समूह बनाये गये थे – कक्षा 1 व 2, कक्षा 3, कक्षा 4, कक्षा 5 और कक्षा 6 व उससे बड़े बच्चों का समूह. शिविर की तैयारी की बैठक 16 मई 2012 को रखी गयी. जिसमें पठन गतिविधियों और भाषा व गणित के शिक्षण पर काम किया गया.

इस शिविर सह कार्यशाला की योजना इस तरह बनायी गयी थी कि हर रोज शिक्षिकायें सुबह 9 से 1 बजे तक बच्चों के साथ काम करेंगी और दोपहर के भोजन के बाद 2 से 5.30 बजे के बीच आगामी दिन की योजना बनायेंगी और उनके साथ विषय सबंधी कुछ मुद्दों पर प्रशिक्षण दिया जायेगा. शिक्षिकाओं द्वारा बच्चों के साथ किये गये काम के अवलोकन के आधार पर उनकी योजना में मदद व विभिन्न मुद्दों पर बातचीत करने का जिम्मा मेरा था.

तैयारी

आरंभ में पठन गतिविधियों पर काम किया गया. उसके बाद भाषा व गणित में काम करने की समग्र योजना पर काम किया गया और आखिर में अगले एक – दो दिनों की योजनायें बनायी गयी. पिछले साल भर में जिन समुदाय शिक्षिकाओं के साथ काम किया गया था उनमें से कई शिक्षिकायें बदल गयी थी. नतीजन भाषा पर काम करने के तरीके पर समूह के साथ फिर से थोड़ा विस्तार से काम करना पड़ा.

शिविर में काम

पहले दिन करीब करीब 250 बच्चे शिविर में आये. इससे शिक्षिकाओं को बच्चों के साथ काम करने में काफी मुश्किलें आयीं. हालांकि हर दिन की योजना बना कर काम किया गया लेकिन बच्चों की संख्या की वजह से उस योजना को लागू करना बेहद मुश्किल था. आरंभ के दो दिन बच्चों की संख्या को कम करने और आने वाले बच्चों के नामों को सुनिश्चित करने में लगे.

अगले सप्ताह की शुरूआत में हरेक कक्षा समूह के लिये भाषा व गणित के लिये मोटे मोटे लक्ष्य तय किये गये. योजना में जिन लक्ष्यों को तय किया गया था उन पर दोबारा विचार करके तय

किया गया. जैसे कक्षा 1 व 2 तथा 3 व 4 के लिये सोचा यह गया था कि उनके साथ पहले तीन दिन संदर्भ पद्धति से काम करने के बाद पढ़ने लिखने की गतिविधियों पर काम किया जायेगा. लेकिन इस योजना को बदल कर कक्षा 1, 2 व 3 के साथ पूरे शिविर में संदर्भ पद्धति से ही काम किया गया. और कक्षा 4 व 5 के कार्य की योजना को बदल कर उनके साथ पढ़ने लिखने की गतिविधियां व मन से लिखना या पढ़ कर लिखना का काम किया गया और थोड़ा बहुत संपादन का काम किया गया. इसके साथ ही कविता बनाने का काम भी किया गया. एल्युमिनाई समूह के साथ कहानी के नक्शे के साथ साथ ज्यादातर काम पढ़ कर सारांश लिखना और उसके संपादन तथा कविता बनाने का काम किया गया.

गणित में भी योजना बदली गयी, जैसे कक्षा 1, 2 व 3 के साथ ज्यादातर काम संख्या पद्धति का किया गया. थोड़ा सा काम शुरूआती जोड़ पर भी किया गया. कक्षा 4 के साथ संख्या पद्धति के साथ जोड़ पर ज्यादा विस्तार से काम किया गया. कक्षा 5 के साथ जोड़ के साथ साथ घटाव पर भी काम किया गया. इन दोनों कक्षाओं के साथ गुणा व भाग के काम को छोड़ना पड़ा. एल्युमिनाई समूह के साथ जोड़ व घटाव पर विस्तार से काम करने के साथ साथ बहुत सारा काम बच्चों द्वारा इबारती सवालों को बनवाने का किया गया. गुणा पर काम की सिर्फ शुरूआत ही हो पायी.

प्रशिक्षण सत्र

रोज बच्चों की साथ किये गये काम की समीक्षा प्रशिक्षण सत्र का एक अहम हिस्सा था. शिक्षिकाओं का रोज काफी सारा समय समीक्षा और अगले दिन की तैयारी में लगता था. जिसमें योजना के साथ बच्चों के साथ काम करने की सामग्री – कार्ड, चार्ट आदि. इसलिये मुद्दों पर बात करने के सत्र कुछ ही दिन चल पाये. इसमें तीन चार सत्रों में कृष्ण कुमार की 'बच्चे की भाषा व अध्यापक' के पहले अध्याय पर गहराई व विस्तार के साथ बातचीत की गयी. एक सत्र में समाज में महिलाओं की स्थिति पर बात की गयी. तो एक-दो सत्रों में गणित की अवधारणाओं पर बातचीत की गयी.

शिविर के अनुभव के आधार पर आगामी काम के लिये सुझाव

1. आरंभिक तैयारी के लिये एक दिन के बजाय करीब चार पांच दिन का वक्त रखा जाना चाहिये. ताकि पूरे शिविर की अकादमिक तैयारी ज्यादा अच्छी तरह से हो सके. जिसमें पूरा शिक्षिका समूह अपने अपने समूह के लिये व्यापक लक्ष्य तय कर सके और भाषा व गणित में काम करने के तौर तरीकों को समझ कर उसके मुताबिक दिनवार लक्ष्य तय करके काम की योजना बना सके.
2. इस बार की गयी समीक्षा में सामूहिक बातचीत कम ही हो पायी. ज्यादातर यह होता रहा कि पहले एक आध घंटे में कुछ सामान्य मुद्दों पर बात की जाती फिर एक एक शिक्षिका से उसके समूह के अवलोकन के आधार पर और खुद के अनुभव के आधार पर बातचीत की जाती. और फिर अगले दिन की योजना पर थोड़ी बातचीत की जाती. इसके बाद शिक्षिकाओं के पास योजना की तैयारी के लिये करीब एक डेढ़ घंटा ही बचता था. इस तरीके से की गयी समीक्षा में प्रशिक्षक के साथ समीक्षा तो हो पायी, लेकिन एक समूह के तौर पर समीक्षा का काम ठीक से नहीं हो पाया.
3. समूहों को कक्षा के आधार पर बनाया गया था इससे एक ही स्तर बच्चे दो या तीन समूहों में थे. बच्चों के समूह कक्षा के आधार पर बनाने के बजाय उनके स्तर के आधार पर बनाने चाहिये.
4. सामग्री के साथ काम करने के मामले में बच्चों व शिक्षिकाओं दोनों का ही अनुभव काफी कम था इसलिये आरंभ का कुछ समय तो उस सामग्री के इस्तेमाल को सीखने में व बच्चों के साथ सामग्री को काम लेने के तरीके सीखने में लगा.
5. बच्चों के साथ काम करने की विस्तृत योजना बनाने पर रोज काफी वक्त लगाया गया. इससे योजना बनाने में शिक्षिकाओं की थोड़ी पकड़ बनी है लेकिन इस पर लगातार काम किये जाने की जरूरत है.
6. बच्चों के साथ काम करने में शिक्षिकाओं को मोटे तौर पर तीन तरह की मुश्किलों का सामना करना पड़ा. पहला, बच्चों का सिखाना क्या है, उस सिखाने में क्या क्या शामिल होगा, उसका क्रम क्या होगा आदि. दूसरा, उसे सिखाने का तरीका क्या हो, सिखाने का आम तरीका क्या हो और किसी शिक्षण बिंदु के लिये खास तौर पर क्या तरीका चुना जाये. और तीसरा, सिखाते वक्त कक्षा व्यवस्था कैसे बनायें कि बच्चों के समय का अधिकतम उपयोग सीखने में हो और कम से कम समय इंतजार में लगे, बगैर जोर से

बोले अपनी बात बच्चों तक कैसे पहुँचायें, एक काम से दूसरे काम में बदलाव सहजता के साथ हो, आदि. इन तीनों पर लगातार बात की गयी व काम भी किया गया.

7. शिक्षा से जुड़े कुछ सामान्य मुद्दे भी उठ कर सामने आते रहे उन पर समयाभाव के कारण विस्तार से बात नहीं हो पायी जैसे, होड़ को बढ़ावा देना, बच्चों के साथ बोली जाने वाली भाषा, शिक्षक का बच्चों के साथ व्यवहार आदि. इसी तरह विषयों को पढ़ाने तरीकों पर तो अलग अलग जगह थोड़ी बातचीत की गयी लेकिन विषय की समग्र प्रकृति, शिक्षा के सामान्य लक्ष्यों से उसके ताल्लुक, सीखने की का मतलब व उसकी प्रकृति, बच्चों की प्रगति के आकलन की जरूरत व तरीके आदि पर काम करने और उन्हें समझने की अभी जरूरत है.
8. हालांकि योजना में पठन गतिविधि का कालांश अलग से रखा गया था. उस कालांश को भाषा के साथ जोड़ कर योजना बनाये जाने की जरूरत है. प्रशिक्षण में ऐसा किया भी गया. आखिरी सप्ताह में पठन गतिविधि की योजना भाषा के साथ जोड़ कर ही बनायी गयी.
9. बच्चों का शैक्षिक स्तर उनकी कक्षा के मुताबिक काफी कम है. बहुत से बच्चे ऐसे थे जिन्हें पढ़ने लिखने में भी मुश्किलें आती थी. ऐसे बच्चे कक्षा 1 से लेकर 5 तक में थे. इसलिये उनके शैक्षिक स्तर को बेहतर बनाने के लिये सिर्फ 15 दिन का काम नाकाफी है. कक्षा 6 व उससे ऊपर वाले बच्चे लिख तो लेते थे लेकिन उनका लेखन व्यवस्थित नहीं था और ना ही वे किसी चीज पर विस्तार से लिख पाते थे. बाकी विषयों पर काम करने से पहले बच्चों की पढ़ने लिखने और पढ़ कर समझने व लिख कर समझ बनाने यानी हिंदी के चारों पहलुओं – सुन कर समझना,बोल कर अपनी बात को समझा पाना, पढ़ कर समझना और लिख कर समझा पाने पर काफी काम करने की जरूरत है.
10. आगामी योजना का एक खाका यह हो सकता है:
    a. सत्र 2012-13 में बच्चों के समूह बना कर उनके साथ भाषा पर गहन काम करना ताकि वे भाषा पर अपनी इतनी पकड़ बना पायें कि बगैर दूसरों की मदद के अपने स्तर की लिखित सामग्री का खुद पढ़ कर समझ लें, खुद लिख पायें, बोल कर समझा पायें और सुन कर समझ पायें.
    b. सत्र 2013-14 में बच्चों के समूह बना कर उनके साथ गणित और पर्यावरण पर काम किया जा सकता है.

इन दोनों कामों के लिये सत्र के आरंभ में शिक्षिकोओं के साथ सघन तैयारी की जाये. और पूरे साल नियमित तौर पर साप्ताहिक व मासिक तौर पर बैठकों में काम की योजना व तैयारी की समीक्षा की जाये और काम के अनुभवों को सांझा किया जाये. यह भी किया जा सकता है कि सप्ताह में 5 दिन शिक्षिकायें बच्चों के साथ काम करें, और उस काम की समीक्षा व अगले सप्ताह की योजना छठवें दिन बनायी जाये.

रवि कांत (शिक्षा सलाहकार)